प्रमुख तथ्य

① मानसून शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के शब्द मौसिम से हुई।

② मानसूनी हवाओं का सर्वप्रथम उल्लेख अरब के भूगोलवेत्ता अलमसूदी ने किया।

③ राज्य का दक्षिणी भाग (बाँसवाड़ा जिला) अरब सागरीय व बंगाल की खाड़ी दोनो मानसूनो से वर्षा प्राप्त करता है।

④ राज्य मे उत्तर पश्चिम से दक्षिण पूर्व की ओर वर्षा बढती जाता है।

⑤ राज्य मे औसतन वार्षिक वर्षा - 57.51 सेमी होती है

⑥ राज्य मे औसतन वार्षिक वर्षा वाले दिनों की संख्या - 29

⑦ वर्षा वाला दिन जिस दिन 0.25 सेमी वर्षा होती है।

⑧ सर्वाधिक वज्र तुफान - जयपुर व झालावाड़ मे आते है

⑨ राजस्थान का चेरापूंजी - झालावाड़

⑩ राजस्थान का शिमला - माउन्ट आबू (सिरोही)

⑪ राजस्थान का बर्खोयान्स → माउन्ट आबू (सिरोही)

वर्षा

सर्वाधिक

- माह → जुलाई-अगस्त
- क्षेत्र → दक्षिणी-पूर्वी
- संभाग → कोटा
- जिला → ① झालावाड़ (100 सेमी, 40 दिन)
  ② बाँसवाड़ा (90 सेमी, 38 दिन)
- स्थान → माउन्ट आबू (सिरोही) (150 सेमी, 48 दिन)

न्यूनतम

- माह → सितम्बर
- क्षेत्र → उत्तर पश्चिमी
- संभाग → जोधपुर
- जिला → जैसलमेर (10 सेमी, 5 दिन)
- स्थान → सम (जैसलमेर) 5 सेमी, 3 दिन

→ **शीत ऋतु** :→ अक्टूबर से फरवरी

↳ सितम्बर के बाद सूर्य दक्षिणायन होने लगता है तो उत्तरी गोलार्द्ध मे सर्दी बढ़ने लगती है।

→ जब - 22 दिसम्बर को सूर्य मकर रेखा पर चमकता है तो यह दिन उत्तरी गोलार्द्ध/भारत/ राजस्थान का सबसे छोटा व ठण्डा दिन होता है।

→ शीत ऋतु को दो भागों मे विभाजित किया गया है।

① मानसून का प्रत्यावर्तन काल = अक्टूबर - नवम्बर

② शीत ऋतु → दिसम्बर - फरवरी

① **मानसून का प्रत्यावर्तन काल:-**

↳ लौटते हुए मानसून की हवाऐं उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम होती है।

→ लौटता हुआ मानसून राज्य मे पूर्वी व उत्तरी पश्चिमी भाग मे वर्षा करता है।

→ लौटते हुए मानसून से राजस्थान मे 10% वर्षा होती है।

→ दीपावली के बाद पड़ने वाली हल्की सर्दी को राजस्थान मे गुलाबी सर्दी कहा जाता है।

→ राज्य मे मानसून पूर्व की वर्षा को दौंगड़ा कहते है (मानसून से पहले)

→ <u>शरद् ऋतु :</u> →

→ इस समय हिन्द महासागर मे निम्न वायुदाब होता है तो हवाऐ उत्तर-पूर्व से दक्षिणी पश्चिम की ओर प्रवाहित होती है तब भूमध्यसागर से आने वाली हवाए आर्द्रता लाती है जिस से वर्षा प्रारम्भ हो जाती है। इस वर्षा को भूमध्यसागरीय चक्रवात या पश्चिमी विक्षोभो से होने वाली वर्षा कहते है।

→ यह चक्रवात ईराक, ईरान, पाकिस्तान होते हुए भारत मे प्रवेश करते है।

→ यह वर्षा दिसम्बर या जनवरी के महिने मे होती है।

→ यह गेहूँ की फसल के लिए लाभदायक होने के कारण इन्हे गोल्डन ड्रोप।स्वर्ण बूंद कहते है।

→ हिन्दू माह माघ के महिने मे होने के कारण इस वर्षा को मावठ कहते है।

→ भूमध्य सागरिय चक्रवातो से राज्य 3% वर्षा प्राप्त करता है।

→ यह वर्षा राज्य मे सर्वाधिक उत्तर पश्चिमी भाग मे होती है।

वाष्पोत्सर्जन

सर्वाधिक
- माह → जून
- जिला → जैसलमेर

न्यूनतम
- माह दिसम्बर
- जिला – झालावाड़

आर्द्रता

सर्वाधिक
- माह → अगस्त
- जिला → झालावाड़
- स्थान → मा. आबू (सिरोही)

न्यूनतम
- माह → अप्रैल
- जिला – जैसलमेर
- स्थान – फलौदी

→ राजस्थान के जलवायु खण्ड :- (5)

राज्य को वनस्पति, वर्षा, तापमान व आर्द्रता के आधार पर पाँच जलवायु खण्डों में विभाजित किया गया है।

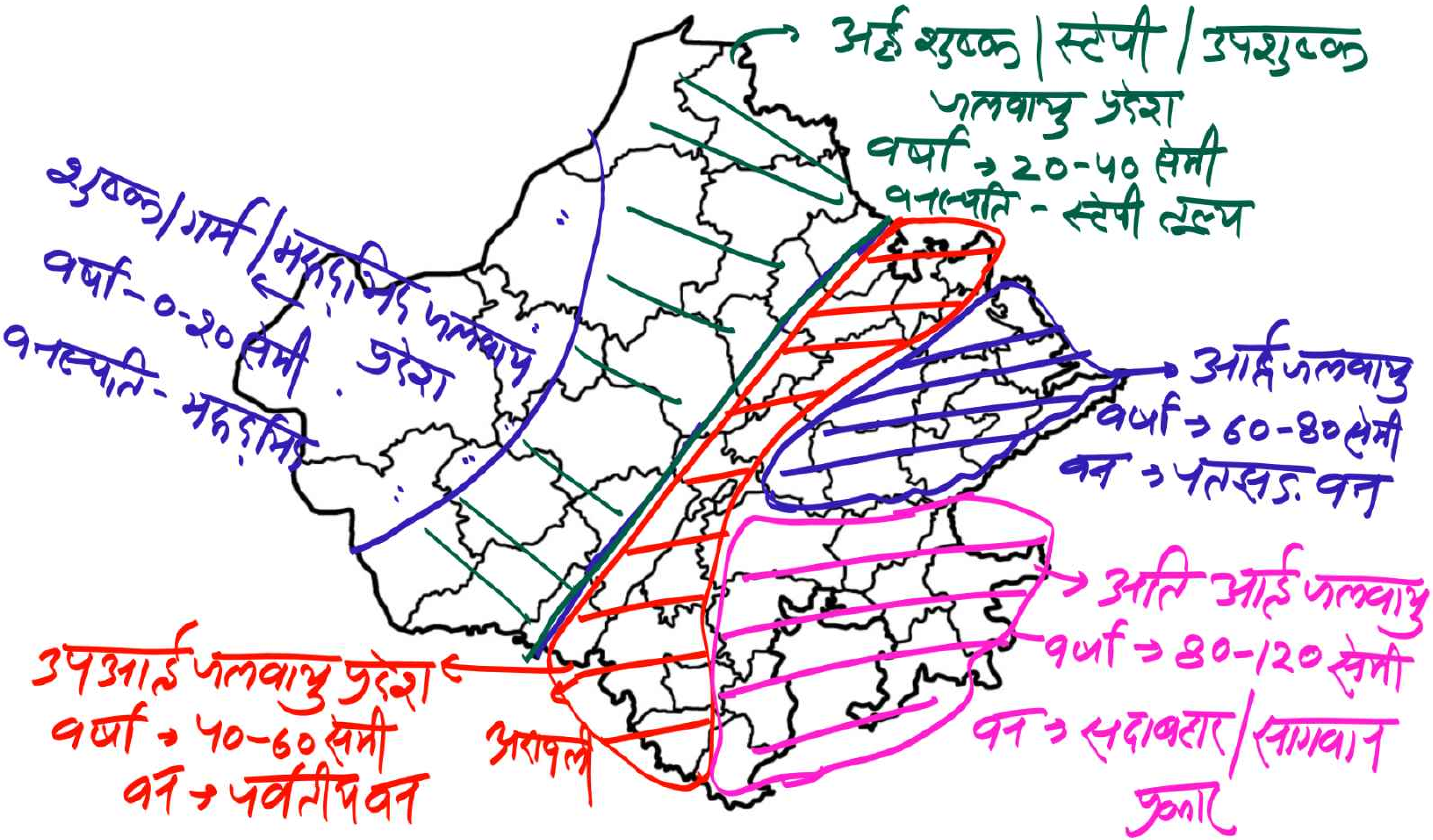

अर्द्ध शुष्क | स्टेपी / उपशुष्क
जलवायु प्रदेश
वर्षा → 20-40 सेमी
वनस्पति - स्टेपी तुल्य
शुष्क/गर्म/मरुस्थलीय जलवायु प्रदेश
वर्षा - 0-20 सेमी
वनस्पति - मरुद्भिद
आर्द्र जलवायु
वर्षा → 60-80 सेमी
वन → पतझड़ वन
अति आर्द्र जलवायु
वर्षा → 80-120 सेमी
वन → सदाबहार/सागवान
प्रकार
उपआर्द्र जलवायु प्रदेश
वर्षा → 40-60 सेमी
वन → पर्वतीय वन
अरावली

नाम	कोपेन	ट्रीवार्था	थार्नवेट
① उष्ण/गर्म/मरुद्भिद	BWhw	BWh	EA'd
② अर्द्धउष्ण/स्टेपी/अर्द्धशुष्क	BShw	BSh	DB'w
③ उपआर्द्र/आर्द्र	Cwg	Caw	DA'w
④ उष्ण कटिबन्धीय आर्द्र	Aw	Aw	CA'w